Item Code: 642 Participant Code: 344

मुझे भी है एक सपना

"मम्मी! जल्दी आओ!" मेरी चिल्लाने की आवाज़ घर को हिला दिया। "सुबह-सुबह क्या शोर मचा रही हो?" माँ की मीठी आवाज़ ने घर को शांत कर दिया। "माँ आज मेरी पसंदिता गायिका हमारे शहर आ रही है।" बचपन से मैं गायिका सुनिता की गाने सुनते आई हूँ। इसलिए बहुत सालो से मेरा एक हि सपना था और वह सुनिता से मिलने का था। "अच्छा, यह तो खुशी की बात है, चलो एक साथ चलते हैं।" माँ मेरी उत्साह को और बढाकर चली गई। मैं मेरी सबसे नए कपड़े पहनकर माँ के साथ चल पड़ी। "पता नही आज का दिन हि शायद अच्छा है।" मैं नाचती गाते सड़क को पार कर रही थी। तभी सड़क के बीच मेरे नए जूते फट गई। माँ पहले हि सड़क को पार कर ली थी। जैसे हि मैंने फटे जूते को हाथ पर लिया एक तेज़ गाडी मुझसे टकराकर, मैं दूसरी तरफ के बगीचे

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

मे आकर गीर पडी। इसके बाद जो सब कुछ हुआ एक सपने की तरह था। माँ दौडकर मेरे पास आ रही थी। उनकी प्यारी आँखों से आँसु बह रही थी। मुझे उन्हे गले लगाने का मन था पर मैं अपने शरीर को नही हिला पा रही थी। धीरे - धीरे मेरी आँखे बंद हो गए।.....

"सुनिता, ~~बिल~~ तुम कितनी देर सो रही हो! आज तुम्हारा शो है, जल्दी उठो।" एक डरावने आवाज़ ने मुझे उठा दिया। "अगर तुमने आज अच्छे से नही गाया तो तुम्हारी हालत को मैं और खराब कर दुँगा।" एक आदमी हसकर मुझसे बोला और चला गया। मैं अपने बिस्तर पर रखी नए कपडे पहनी और बाल ठीक करने आइना पर देखी तभी मेरे आँखों मे बरोसा नहीं हुआ मेरे आगे सुनिता खड़ी थी, ~~थी~~ मैं ~~म~~ ~~मशहूर~~ मशहूर गायिका सुनिता बन चुकी हूँ। तभी वह आदमी मुझे सुनिता बुलाते हुए याद आया। ~~वह~~ मैं बस किताबों पर पढी हूँ कि दो लोगो की आत्मा ~~इस~~ ~~इधर-उधर~~ अदला - बदली होना। पर

यह मेरे साथ हुआ है। मुझे खुशी के चक्कर से मैं वहाँ नाचने लगी। तभी, वही आदमी आकर मुझे जल्दी करने को कहा। मैं जल्दी से तैयार होकर स्टेज की ओर चल पडी। बहुत सारे लोग मेरा इंतज़ार कर रही थी। मैंने बहुत से गाना गाए और सुनिता जैसी नाचने लगी। वो खतम होने के बाद मैं अपने कमरे में आराम करने लगी। पर अचानक वही आदमी मेरे पास आकर मुझे मारा, मेरे सीर से खून बहने लगा। "तुम इतना बुरा क्यों गाती हो?" वह आदमी गुस्सा होकर चल पड़ा। दर्द की वजह से मेरे आँखों से आँसु आ रही थी। मैं नहाने के लिए चल पडी। जैसे मैंने कपडा खोला मेरे शरीर पर बहुत से चोट के निशाने दिखने लगी। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। नहाने के बाद मैं सुनिता की डायरी पढ़ने लगी। मुझे पता था सुनिता डायरी लिखती है। मैं थोडी शर्मिंदा थी, क्योंकि हमें किसी की डायरी

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 642 Participant Code: 344

पढ़नी चाहिए। पर अब मैं ~~~~ सुनिता हूँ इसलिए कोई बात नहीं। "माफ कर दो, सुनिता!" मैंने अपने आप से कहा। मैं सुनिता की डायरी ~~~~ खोली। हर पन्ने में सुनिता की आँसू छुपी हुई थी। वह ~~~~ डरावना आदमी मैनेजर है जो सुनिता को बहुत परेशान करता है। सुनिता की डायरी में ~~~~ लिखी एक-एक शब्द पढ़कर मेरे आँखों में आँसू आने लगी। जिस सुनिता को मैं जानती थी, जो हर समय अपनी मुस्कुराहट फैलाती थी। जिसके जिवन को मैंने एक मात्रा की तरह देखा। उसकी सच्ची जीवन अलग हि है। मुझे गुस्सा और दुख एक ~~~~ साथ आ रहा था। मैंने जल्द हि पुलिस को कॉल करी और मैनेजर ~~~~ के ऊपर शिकायत किया और उसे पकड़ने के लिए मजबूर किया। जैसे हि मैंने ~~~~ कॉल काटा, दरवाज़ा ज़ोर से खुला वही मैनेजर मेरे सामने खड़ा था। ~~~~ ~~~~ उसके ~~~~ ~~~~ ~~~~ हाथ में चाकू था। वह दरवाज़ा को बंद किया और मेरे पास आ रहा था। ~~~~ ~~~~ ~~~~ हिम्मत ~~~~

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 642 Participant Code: 344

"तुम्हें इतनी हिम्मत कहा से आई! पुलिस को ~~क~~ कॉल करने का। अब तुम बच नहीं पाओगी।" जैसे हि वह मुझे मारने आया, मैंने अपने आँखों को बंद किया "माफ कर दो सुमित मैं तुम्हें बचा नहीं पाई, मेरा बस एक हि सपना है कि तुम खुशहाल से जी सको। शायद यह सपना सपना हि रहेगा।" तभी दरवाज़ा खुला, ~~अचानक~~ ~~पुलि~~ जल्द हि पुलिस आकर मैनेजर को पकड़ लिया। और मुझे एक सुरक्षीत ~~जग~~ जगह लेकर ~~चले~~ ~~गए~~ गए। अगले दिन यह खबर पूरी जगह फैल गई। बहुत से समाचारिके मेरे घर के सामने पहुँच गए। ~~व~~ वे बहुत सारे सवाल पुछने लगे। मैं हर सवालों का उत्तर हिम्मत से कहा। "आप ~~आपके~~ ये समाचार देखने वाले लोगों से क्या कहना चाहते हो?" एक आदमी पुछा। मैं अपने गले को ठीक किया और बोला "हर लोगों को बहुत से सपने है। जिसमें कई लोगों का सपना शायद कोई मशहूर लोगों की ~~नकल~~ नकल करके जीने का हो। पर मैं आप सभी से चाहती हूँ कि आप ऐसा न करें, आप एक ऐसा सपना देखे जिसमें आप मुझसे भी ज्यादा आगे पहुँचे। क्योंकि हर लोगों का दो चेहरे है। एक

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 642 Participant Code: 344

चेहरा खुश हो तो दूसरा दुख। आप उस दोनों चेहरे को खुश करने की कोशीश करिएगा।" सारे लोगों ने तालियाँ बजाई। तभी मेरा सिर दर्द होने लगा। मैं बेहोश हो गई मैं जैसे हि आँखे खुली एक पहचानी आवाज़ जो हमेशा मेरे दिल को पिगलाती है "माँ!" मेरी आँखे खुली, मैं अस्पताल मे बिस्तर पर लेटी थी। माँ मुझे गले लगाई। मैं बहुत खुश हुई पर मैं उदास भी थी कि मैं सुनिता को बचाने का सपना सपना हि रहा। पर तभी टि.वी पर मैंने जो हि बातचीत प्रदर्षित हुई। मैं खुश हो गई आखिर कार मैंने सुनिता को उस मैनेजर से बचा हि लिया। थोडी दिनो के बाद मैं फिर से स्कूल जाना शुरू कर दिया। "आप सब का सपना क्या है?" टिचर ने पूछा। हर बच्चे ने एक एक कहाँ। मेरी बारी आई। "क्या तुम फिर से सुनिता बोलोगी?" टिचर ने पूछा। बच्चे सब हसने लगे। "नहीं, मुझे भी एक सपना है?"। "क्या?" टिचर पूछी। "मैं एक ऐसा व्यक्ति बनना चाहती हूँ जो हर लोगों को, हर स्त्रीयों को हमलाओं से रक्षा करे।" मेरा जवाब सुनकर पहले सब शांत हुए, पर धिरे टिचर और बच्चे तालिया बजाने लगे।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)